ماہنامہ **شعاع عمل** لکھنؤ

مئی ۲۰۱۰ء

قَالَ اللّٰهُ تَبَارَکَ وَتَعَالٰی قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ کِتَابٌ مُّبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

May 2010

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-6

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक-11

मई - 2010

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

"लखनऊ"

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद

प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(मई 2010ई० रबीउस्सानी-जमादिल अव्वल 1431हि०)

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— हज़रत फ़ातिमा ज़हरास० ज़िन्द—ए—जावेद...... प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला	3
2— इस्लाम में पर्दे का तसव्वुर क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब क़िब्ला	6
3— मुसलमानों के तमाम मसाएल का हल........ जनाब शकील हसन शमसी साहब, देहली	8
4— नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन का परिचय (अंग्रेज़ी में) इदारा	11
5- मुख्य समाचार इदारा	15

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः 80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः 60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः 40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः 20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

रसूले ख़ुदा (स०) ने फ़रमायाः-

- पाँच चीज़ों को पाँच चीज़ों से पहले ग़नीमत समझोः- (1) जवानी को बुढ़ापे से पहले (2) सेहत को बीमारी से पहले (3) मालदारी को फ़क़ीरी और नादारी से पहले (4) फ़ुरसत को मशग़ूलियत और मसरूफ़ियत से पहले (5) ज़िन्दगी को मौत से पहले।
- दो नेमतें ऐसी हैं जिनके बारे में बहुत से लोग धोखे में हैं:- एक सेहत दूसरे फ़ुरसत।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा(स०) ज़िन्द-ए-जावेद नमून-ए-अमल

प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला, अलीगढ़

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा सलवातुल्लाहि अलैहा पैग़म्बरे इस्लाम^{स०} की दुख़्तरे अर्जुमन्द, जिनसे रसूले अकरम^{स०} की ज़ुर्रियत और पाक नस्ल दुनिया में बाक़ी है, हज़रत अली शेरे ख़ुदा की ज़ौजा और शियों के ग्यारह इमामों की मादरे गिरामी हैं जिनको इस्लाम ने ख़वातीन के लिए नमूना बनाकर पेश किया है।

इस्लाम ने महज़ किताब और शरीअत पर इक्तेफ़ा नहीं किया बल्कि आइन के साथ बाज़ शख़सियतों को राहनुमा और अमली नमूने के तौर पर मुन्तख़ब किया है ताकि वह किताब की तालीम और इस्लाम की रूह और उसके जौहर को अपने किरदारो अमल की सूरत में पेश करें। पैग़म्बर और बारह इमाम इसी तरह के नमूने हैं।

ख़ुदाए तआला ने मर्द और औरत को मुख़तलिफ़ ख़ुसूसियत के साथ पैदा किया है। बहुत से ऐसे हालात, कैफ़ियतें, जज़्बात और ताल्लुक़ात औरत में पाये जाते हैं जो मर्द में नहीं पाये जाते हैं। इसलिए ज़रूरी था कि इस्लाम, पैग़म्बर और अइम्मा के साथ-साथ औरतों के लिए भी ख़ास नमूना और उसवा पेश करे। एक ऐसी हस्ती जो ये बताये कि एक मुसलमान ख़ातून को कैसा होना चाहिए? बाप, शौहर, फ़रज़न्द और समाजी व सियासी ज़िन्दगी के सिलसिले में एक औरत का क्या बर्ताव होना चाहिए? जनाब फ़ातिमा^{स०} ऐसी ही हस्ती हैं जिन्हें इस्लाम ने एक मिसाली ख़ातून की सूरत में पेश किया है। इसी वजह से पैग़म्बरे इस्लाम^{स०} ने जनाब फ़ातिमा^{स०} से ख़िताब करते हुए फ़रमायाः "मरियम अपने ज़माने की आला तरीन ख़ातून थीं मगर तुम हर ज़माने और हर सदी की आला तरीन ख़ातून हो।"

इस तरह जनाब फ़ातिमा ज़हरा^{स०} तमाम ख़वातीन के लिए एक नमूना और मिसाल हैं। नामवर मिस्री मुहक्क़िक़ अब्बास महमूद अल-एक़ाद भी इस नुकते की तरफ़ इशारा करते हुए लिखता हैः "हर दीन में एक ऐसी मुक़द्दस और कामिल ख़ातून का वजूद होता है जिसे उस दीन के मानने वाले ख़ुदावन्दे तआला की निशानी समझते हुए उसकी तक़दीस के मोतक़िद होते हैं, ईसाई मज़हब में जनाब मरियम का वजूदे मुक़द्दस और अफ़ज़ल माना गया है, इसी तरह इस्लाम में हज़रत फ़ातिमा ज़हरा^{स०} एक मिसाली ख़ातून हैं।

दीन में एक मुक़द्दस 'ख़ातूने कामिल' इस दीन की तालीमात और ख़ुसूसियात का अमली मज़हर होती है। मिसाल के तौर पर तहरीफ़ शुदा मसीहियत चूँकि रहबानियत, गोशा नशीनी और मआशरे से बेताल्लुक़ होकर मानवियत और रूहानियत से मुन्सलिक रहने का अक़ीदा पेश करती है, इसलिए मज़हब की मिसाली ख़ातून यानी मरियम अज़रा की जो शक्ल मसीही पेश करते हैं वह इन ही ख़ुसूसियात की मज़हर है।

लेकिन इस्लाम एक ऐसा दीन है जिसके मुतअद्दिद पहलू हैं। इस्लाम में मानवियत, इज्तेमाओ व सियासी ज़िन्दगी से ताल्लुक़, इबादत, ख़ानदानी और घरेलू ज़िम्मेदारियाँ, इरफ़ान और जोहाद यानी ज़िन्दगी का हर रुख़ मौजूद है। हज़रत ज़हरा^{स०} ने भी जो इस्लाम की मिसाली ख़ातून हैं, जिनकी पाकीज़ा सीरत तमाम मुसलमान ख़वातीन के लिए नमूना है, अपनी ज़िन्दगी में दीने इस्लाम के हर रुख़ को पेश फ़रमाया है। अक्सर उलमा और मोहक्क़िक़ीन मसलन तक़ी सबकी, जलाली सुयूती, ज़रकशी और तक़ी मक़रेज़ी तमाम दुनिया की ख़वातीन पर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की अफ़ज़लियत और उनके किरदार और मिसाली सीरत के मोअ्तरिफ़ हैं और

इसका नुमायाँ तौर पर ज़िक्र भी फ़रमाया है। चुनानचे तक़ी सबकी जो उलमा-ए-अहलेसुन्नत में से हैं इस सवाल का कि ''इस्लाम में अफ़ज़ल तरीन ख़ातून कौन हैं?'' यूँ जवाब देते हैं ''मेरा एतेक़ाद है कि फ़ातिमा[स०] दुख़्तरे मुहम्मद सारी दुनिया की औरतों में अफ़ज़ल तरीन ख़ातून है।'' इब्ने दाऊद ने इसी सवाल के जवाब में कहा है कि ''जब पैग़म्बरे ख़ुदा ने जनाब फ़ातिमा ज़हरा को अपने जिस्म का टुकड़ा कहा है तो अब इसके बाद किसी और का उनसे अफ़ज़ल होना क़तई नामुमकिन है इसलिए कि पैग़म्बर के जिस्म के टुकड़े पर किसी को क़यास नहीं किया जा सकता।

मोअ्तबर अहादीस और अख़बार के मुताबिक़ पैग़म्बरे इस्लाम ने ख़ुद जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] को ''दुनिया की तमाम औरतों की सरदार'' कहा है और उनकी पाकीज़ा सीरत को ख़वातीने आलम के लिए तारीख़ी नमूना बनाकर पेश किया। अहलेसुन्नत की मोअ्तबर किताबों में हज़रत आयशा से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा[स०] ने जनाब फ़ातिमा[स०] से कहाः ''जाने पिदर फ़ातिमा[स०] क्या तुम इस बात पर ख़ुश नहीं हो कि तुम तमाम ख़वातीन से अफ़ज़ल और मेरी पूरी उम्मत की ख़वातीन की सरदार हो और बाईमान औरतों में सबसे बरतर हो?''

इमरान बिन हसीन से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा[स०] ने जनाब फ़ातिमा से पूछाः ''ऐ जाने पिदर! क्या तुम्हें ये जानकर ख़ुशी नहीं हुई कि तमाम आलम की ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल व बरतर हो?'' जवाब में जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] ने सवाल किया कि ''अगर मैं सबसे अफ़ज़ल हूँ तो मरियम बिन्ते इमरान क्या हैं?'' रसूलुल्लाह[स०] ने फ़रमाया ''वह सिर्फ़ अपने दौर की ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल हैं और तुम हर दौर की ख़वातीन में सबसे अफ़ज़ल हो।'' इस तरह जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] दुनिया की तमाम ख़वातीन के लिए एक मिसाली ख़ातून और नमून-ए-अमल हैं।

उन्होंने नमूना पेश किया है कि एक मुसलमान ख़ातून को किस तरह रूहानियत से भी मुताल्लिक़ रहना चाहिए और ख़ानदान की ज़िम्मेदारियों का भी ख़याल होना चाहिए और साथ ही साथ समाजी और अक़ीदती जेहाद में शामिल रहना चाहिए। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] की ज़िन्दगी में हम इरफ़ान, घर के काम-काज करना और इज्तेमाओ व एतेक़ादी जेहाद तीनों पहलुओं को अपने उरूज पर पाते हैं।

मुबाहला जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] के मानवी व इरफ़ानी मक़ामात की रफ़अत की एक अबदी सनद है। मुबाहला के तारीख़ी वाक़िए में नजरान के नसारा जो इबादत व रियाज़त में मशहूर हो चुके थे, उनसे मुक़ाबले में रूहानी व मानवी एतेबार से पूरे गिरोहे इस्लामी में सिर्फ़ पाँच लोगों को चुना गया, उन पाँच रूहानी लोगों में से एक फ़र्द जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] हैं। नसारा अपनी मानवी क़ुव्वत पर बहुत घमण्ड करते थे, मगर इन ख़ुदाई हस्तियों के मुक़ाबिल ठहरने की जुराअत न कर सके। अबूहारसा अस्क़फ़ नसारा मुबाहला करने से रुक गया। जब उसके साथियों ने उससे पूछा कि ''तू ने मुहम्मद से मुबाहले का ख़याल तर्क क्यों कर दिया? तो उसने जवाब दिया ''ख़ुदा की क़सम मैंने ऐसे चेहरे देखे जो अगर दुआ माँगे तो पहाड़ हरकत में आ जाएं और अगर हमारे हक़ में बद्दुआ करें तो साल न गुज़रे कि नसारा में से एक शख़्स दिखाई न दे और उनकी बद्दुआ से सब कुछ तबाह हो जाए।''

ये वाक़िआ मुकम्मल तौर पर हज़रत फ़ातिमा ज़हरा[स०] के आला इरफ़ानी व मानवी मंज़िलत की निशानदही करता है। मसीहियत के बरख़िलाफ़ इस्लामी इरफ़ान व मानवियत रहबानियत या रियाज़त करने वालों का इरफ़ान नहीं है, बल्कि एक जेहादे मुसलसल है जहाँ इन्सान इज्तेमाओ ज़िन्दगी से कनाराकश नहीं होता। इस मसले का अमली नमूना जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] ने पेश किया जो तमाम दुनिया की औरतों के लिए बेहतरीन नमूना है।

तारीख़ से साबित होता है कि जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] ने बाज़ ग़ज़वात में भी शिरकत की और पैग़म्बर ने इज्तेमाओ मसाएल में आप से मश्वरे भी लिये हैं और जंगों में बाज़ ज़िम्मेदारियाँ आपके सुपुर्द थीं।

जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] ने मआशरे की इज्तेमाओ

और फ़िक्री ज़िन्दगी में भी शिरकत की है, पैग़म्बर[स०] की हदीसें भी बयान फ़रमाती थीं, ख़वातीन की हिदायत भी करती थीं, जंगों में हिस्सा भी लेती थीं और वक़्त ज़रूरत तलवारों और तीरों की बारिश में अपने वालिद और अपने शौहर का साथ भी देती थीं, प्यासों को पानी पिलाती थीं, ज़ख़्मों में मरहम पट्टी भी करती थीं और लश्करे इस्लाम की ग़ैरत को भी ललकारती थीं। वाक़िदी ने लिखा है कि ''हज़रत फ़ातिम ज़हरा ने जंगे ओहद में ज़ख़मी लोगों की मदद की और उनके ज़ख़मों पर मरहम रखा। दूसरे इज्तेमाई मसाएल में भी वह अपने वालिद की मुआविन रही हैं जैसा कि तारीख़ से ज़ाहिर है कि जब ख़वातीन पैग़म्बर की बैअत कर रही थीं तो वह जनाब रसूले ख़ुदा[स०] के साथ थीं।

पैग़म्बर[स०] के बाद भी जनाब ज़हरा[स०] इस्लामी मआशरे की ख़बरगीरी करती रहीं बल्कि यूँ कहना चाहिए कि जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] वह पहली ताक़तवर हस्ती थीं जो फ़रयाद करने और ज़ुल्म के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करने मस्जिदे नबवी में गईं। आपकी शोला बयान और ज़लज़ला पैदा करने वाली तक़रीर आपकी शुजाअत, शहामत, इलाही निगाह और सियासी व इज्तेमाई दूरबीनी को वाज़ेह करती है। इस बात का भी पता चलता है कि औरत इस्लामी मआशरे में इज्तेमाई सियासी और आरतों के बारे में पैदा होने वाले मसाएल से अगल नही है। इस्लामी मआशरा की क़िस्मत बनाने में हिस्सा लेने के बाद भी मुस्लिम औरत को ये नहीं भूलना चाहिए कि वह ''औरत'' है। ऐसी सूरत में उसे अपनी इफ़्फ़त, अपने तक़द्दुस और पर्दा को बरक़रार रखना चाहिए। जनाब सैय्यदा ने अपने तौर-तरीक़ों ऊपर लिखी बातों को बताया है।

अनस बिन मालिक से रिवायत है कि पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] ने अपने अस्हाब से पूछा कि ''कौन सी चीज़ ख़वातीन के लिए सबसे अच्छी है?'' कोई इसका जवाब न दे सका। हज़रत अली[अ०] फ़ौरन जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] के पास गये और उनसे सवाल के बारे में पूछा। जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] ने कहाः ''आप ने क्यों न कह दिया कि ख़वातीन के लिए सबसे बेहतर ये है कि वह मर्दों की जानिब नज़र न करें और मर्दों के लिए सबस बेहतर ये है कि वह ख़वातीन से मरऊब न हों।'' हज़रत अली[अ०] जनाब रसूले ख़ुदा[स०] की ख़िदमत में तशरीफ़ लाये और यही जवाब दोहराया। रसूले ख़ुदा ने फ़रमाया ''ऐ अली तुमको ये किसने बताया है?'' हज़रत अली ने जवाब दियाः ''फ़ातिमा ने'' इस पर पैग़म्बर ने फ़रमाया ''सच तो ये है कि फ़ातिमा मेरे ही जिस्म का एक टुकड़ा है'' जनाब ज़हरा ने साबित कर दिया कि एक मुसलमान ख़ातून इस्लामी मआशरे में अपनी निस्वानियत, इफ़्फ़त और ख़ुद्दारी के तहफ़्फ़ुज़ के साथ इज्तेमाई ज़िन्दगी में भी शिरकत की हक़दार है।

इसी तरह एक मुसलमान ख़ातून, ख़ानदान की ख़िदमात अन्जाम देना और नई नसल की परवरिश व परदाख़्त को अपना फ़रीज़ा समझती है। चुनानचे जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] एक तरफ़ इरफ़ानी और रूहानी मक़ामात में आयते ततहीर की तफ़सीर हैं, दूसरी तरफ इज्तेमाई और सियासी ज़िन्दगी में भी दख़ील हैं। ख़ानदानी और घरेलू माहौल में एक उलफ़त शेआर शरीके हयात, एक दुख़्तरे वफ़ादार और एक मादरे मेहरबान भी हैं। हज़रत फ़ातिमा ज़हरा अपने वालिदे गिरामी के लिए एक मिसाली औलाद हैं, वह सिर्फ़ औलाद ही नहीं बल्कि अपने बाप की परस्तार, मुशीर, रफ़ीक़ और मुईन भी हैं। तकलीफ़ों में उनका साथ देती हैं और उन्हें तसल्ली देती हैं। इसी वजह से उन्हें ''उम्मो अबीहा'' यानी अपने बाप की माँ कहते हैं।

जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] शौहर के लिए एक मेहरो मुहब्बत करने वाली शरीके हयात, हज़रत अली[अ०] की मोनिसे तनहाई हैं जो अपने शौहर के साथ मुसलसल दुख दर्द झेल रही हैं लेकिन पेशानी पर शिकन तक नहीं आने देती हैं।

जनाब ज़हरा एक ऐसी माँ हैं जिनकी आग़ोश में हसन[अ०] व हुसैन[अ०] और ज़ैनब[स०] जैसी औलाद परवान चढ़ती हैं। इबादातो अख़लाक़ बल्कि हर लेहाज़ से जनाब फ़ातिमा ज़हरा[स०] बिला तफ़रीक़ हर एक के लिए नमूना हैं।

(किताब- उस्वहा-ए-जावेद से)

इस्लाम में पर्दे का तसव्वुर

क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद नक़वी, जनरल सेक्रेट्री मजलिस उलमा-ए-हिन्द

इस्लाम की शुरुआत से लेकर आज तक, इस्लाम दुश्मन ताक़तें इस्लाम पर हमला कर रही हैं। इसमें कभी असलहों का इस्तेमाल किया गया और कभी ज़बानो क़लम का। लेकिन इस ज़माने में साईंन्सी ईजादात की वजह से ये हमले ज़्यादा ख़तरनाक और वसीअ् सूरत इख़्तियार कर गये हैं। ऐसे असलहे हैं कि लाखों इन्सानों को चन्द सेकेण्डों में मौत की नींद सुला दें और ज़राए इबलाग़ का निज़ाम इतना फैल गया है कि चन्द मिन्टों में किसी भी ग़लत और ज़हरीले बयान से करोड़ों के ज़हन मसमूम किये जा सकते हैं।

जहाँ और बहुत से इस्लामी अहकाम पर एतेराज़ात की बौछार है, वहाँ इस्लाम में पर्दे के निज़ाम को ख़ास तौर से निशाना बनाया जा रहा है। पर्दे के मसले पर हमारा चन्द गिरोहों से सामना है। कुछ तो वह ग़ैर मुस्लिम हैं जो इस्लाम के खुले हुए दुश्मन हैं और उनका मक़सद इस्लाम को बदनाम करना और लोगों को इससे मुतनफ़्फ़िर करना है, वह सिरे से ही पर्दे के मुख़ालिफ़ हैं और इसको वहशत, बरबरियत, ख़िलाफ़े इन्सानियत और ख़वातीन पर ज़ुल्म गरदानते हैं और बराहे रास्त दीने इस्लाम पर हमला आवर हैं। कुछ वह हैं, कि हैं तो मुसलमान मगर मग़रिब ज़दा हैं अगरचे पर्दे की यकसर मुख़ालिफ़त की हिम्मत नहीं है मगर मग़रिब के नक़्क़ादों को मुतमइन करने की कोशिश में कहते हैं कि पर्दा सिर्फ़ नज़र का है और पर्दे से मुराद सिर्फ़ शर्मो हया है ताकि क़दामत परस्ती और तंग नज़री के इल्ज़ाम से अपने को बचाएं और उन्हें खुले दिलो दिमाग़ का और तरक़्क़ी परसन्द होने का सर्टिफिकेट मिल जाए। मोतरिज़ीन में एक तबक़ा वह है जो सिर्फ़ नाम से मुसलमान हैं। ऐसे लोग मज़हब से बिल्कुल बेबहरा हैं, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी के बन्दे और हवस के ग़ुलाम हैं। दिल लुत्फ़े नज़ारा का शैदा है और फिरदौस गोश के साथ-साथ जन्नत निगाह की तलाश है। पर्दे को मुल्लाओं की गढ़ंत कहते हैं और दिली तमन्ना है कि औरतें सिर्फ़ बेपर्दा ही नहीं बल्कि कम से कम लिबास के साथ घरों से बाहर आ जाएं।

हम सबसे पहले क़ुरआन मजीद के ज़रिये गुफ़्तगू करेंगे कि क़ुरआन मजीद ने पर्दे का क्या मेयार पेश किया है क्योंकि अहकामे इस्लाम का अव्वलीन मसदर और सरचश्मा कलामे इलाही है। क़ुरआन मजीद में रब्बे हमीद का इरशाद है: "ऐ रसूल[स०] मोमिनीन से कह दीजिये कि वह अपनी आँखें झुकाए रखा करें" आय-ए-करीमा मुतलक़ है यानी इसमें कोई क़ैद नहीं कि किसी ख़ास वक़्त पर आँखें झुका लिया करें या हर वक़्त आँखे मूँदे रहा करें। किसी ख़ास चीज़ के देखने की मुख़ालिफ़त है या हर चीज़ पर देखने की रोक है? किसी बात की तख़सीस नहीं है। मगर हर इन्सान की अक़्ल हुक्म करेगी कि ये मतलब हरगिज़ नहीं है कि किसी शै पर निगाह न डालें और कोई शै देखा ही न करें। अगर ऐसा हुक्म होता तो फिर अल्लाह ने आँखें अता ही क्यों कीं? कुव्वते बसारत दी ही क्यों। वह कौन सी शै है जिसे न देखने के वास्ते आँखें झुका लेने का हुक्म है इसका बेहतरीन फैसला शाने नुज़ूल करेगी। शाने नुज़ूल आयत की ये थी कि एक मरतबा अन्सार में से एक शख़्स किसी रास्ते से गुज़र रहा था सामने से एक जवान और हसीन औरत आती हुई दिखाई दी। हुस्न की कशिश ने

मजबूर किया और ये देखने में महव हो गया यहाँ तक कि वह पास से गुज़र गई मगर तब भी उसकी तबियत सैर नहीं हुई। ये देखता भी जाता और अपनी मंज़िल की तरफ़ क़दम भी बढ़ाता जाता था। चन्द क़दम आगे बढ़ा और एक दीवार से टकरा गया जिसमें शीशा लगा हुआ था और उसका चेहरा ज़ख़्मी हो गया। अब होश आया तो देखा पूरा लिबास ख़ून से तर है। इसी हालत में रसूलुल्लाह सल-लल्लाहु अलैहि व आलिही वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, पूरा वाक़िआ बयान किया और शिकायत की कि हुज़ूर[स॰] ये औरतें बेपर्दा घूमती हैं और कशिशे हुस्न मजबूर कर देती है देखने पर, इसी से आज मेरी ये गत हुई। उस वक़्त ये आयत उतरीः ''ऐ रसूल[स॰] मोमिनीन से कह दीजिये कि वह अपनी आँखें झुकाए रखा करें'' तो अब मतलब साफ़ हुआ कि किस चीज़ के देखने से मना किया गया है। आय-ए-करीमा से नतीजा निकला कि मर्दों को औरतों पर नज़र करना हराम है। क़ुरआन मजीद की आयत यूँ भी हुक्म दे सकती थी कि मोमिनीन औरतों को न देखा करें लेकिन इन्तिहाई एहतेमाम ये किया गया कि नज़रें झुका लिया करें ताकि असल रुयत की हुरमत इस क़दर अहम हो जाए कि जो मुक़द्दमा अद्मे रुयत का उसी को वाजिब कर दिया गया। और महज़ इसी हुक्म पर इक्तेफ़ा नहीं की बल्कि औरतों के लिए इरशाद हुआः ''ऐ रसूल[स॰] औरतों से भी कह दें (कि उन पर मर्दों का देखना हराम है) अपनी आँखें झुकाए रखें।'' (सूर-ए-नूर) आपने देखा कि क़ुरआन मजीद का इन्तिहाई इन्तिज़ाम, इधर मर्दों को हुक्म कि औरतों को न देखें उधार औरतों को हुक्म कि मर्दों को न देखें। एक ही कलमा दोनों के वास्ते है। तो अब इस हुक्म के बाद अक़्ल बताती है कि एक और हुक्म की ज़रूरत है कि जिसके बाद दिक़्क़तें न हों बल्कि आसानी हो काम न बिगड़े बल्कि बन जाए और उस्र व हरज लाज़िम न आए। जब मजलिसों में, महफिलों में, रास्तों में, दुकानों में, मदरसों में, स्कूलों और कालेजों में दोनों ही मौजूद हैं, औरतें भी हैं और मर्द भी और हुक्मे क़ुरआनी की पाबन्दी, निगाहें बिल्कुल झुकाए रखना हैं, तो सवाल ये है कि आगे का रास्ता कैसे नज़र आए? वहाँ एक शख़्स अन्सारी का चेहरा बेपर्दगी की वजह से ज़ख़्मी हुआ था, यहाँ पता नहीं कितने लोग पर्दे की वजह से ज़ख़्मी हो जायेंगे। साथ ही साथ शैतान का वसवसा भी और हुस्न की हशर सामानियाँ भी, लेहाज़ा निगाह उठ ही जायेगी। इधर नज़र से नज़र लड़ी, उधर फ़साद का समान मुहैय्या हो गया। एक निगाह के लड़ने से कितने फ़साद पैदा हो जायेंगे। इसीलिए पर्दे का हुक्म हुआ ताकि मुस्तहकम दीवारें हायल रहें और नक़ाब के हिसार खिंचे रहें। आयत की रोक अलग हो, हुरमत की दीवार अलाहेदा हो फिर ग़ज़्ज़े बसर का हुक्म भी हो और नक़ाब के पर्दे भी पड़े रहें। जब मर्द और औरत दोनों को निगाह करने से मना किया गया तो ज़रूरी हुआ कि किसी एक को पर्दे में रखा जाए ताकि आयत पर अमल आसान हो जाए। अब सवाल ये होता है कि किसको पर्दे में रखा जाए, औरतों को या मर्दों को? फ़ौरन अक़्ल का मुक़तज़ा होगा कि पर्दा औरतों के लिए बेहतर और आसान तर है। इसकी पहली वजह ये है कि जो कशिश औरतों में होती है वह मर्दों में नहीं और दूसरी वजह ये है कि औरतें फितरतन शर्मीली होती हैं और हया से अपनी निगाहों को उमूमन झुकाए रखती हैं (मगरये कि ग़ैर फ़ितरी माहौल की आदी हो जाएं) अब आय-ए-करीमा आगे बढ़ती है और हुक्म होता हैः ''ऐ रसूल[स॰] ईमान लाने वाली औरतों से कह दीजिये कि बदकारियों से अपनी हिफ़ाज़त करें और अपनी कोई ज़ीनत किसी मर्द के सामने ज़ाहिर न करें मगर ये कि इत्तेफ़ाक़न ज़ाहिर हो जाएं'' इतना ही कहना काफ़ी था मगर आयत ने और ताकीद कर दी ''अपनी ओढ़नियाँ इस क़दर लटकाएं कि सीने तक पहुँच जाएं'' अच्छा बस, अब तो आयत ख़त्म हो जाती। मगर नहीं, ताकीद पर ताकीद और हुक्म पर हुक्म ''और अपनी ज़ीनतों को हरगिज़ ज़ाहिर न करें अलबत्ता सिर्फ़ अपने शौहरों के सामने''। इसी तरह बाप, खुसर और अपनी औलाद और शौहर की औलाद, अपने भाई या भांजे और भतीजे, इन सबके सामने ज़ीनतों के ज़ाहिर करने में कोई हरज नहीं।

बक़िया.......पेज 10 पर

मुसलमानों के तमाम मसाएल का हल... इत्तेहाद बैनुलमुस्लिमीन

जनाब शकील हसन शमसी साहब ''राष्ट्रीय सहारा'' उर्दू, दिल्ली

इख़्तेलाफ़ इन्सान की फ़ितरत में शामिल है और इख़्तेलाफ़ करने की इस रविश ने हमेशा तरक़्क़ी के दरवाज़े खोले हैं। दो इन्सानों के दरमियान किसी बात पर इख़्तेलाफ़ होने से ही हमेशा तहक़ीक़ के नये दरवाज़े खुलते हैं। समाजियात के एक्सपर्टस हों या उलूमे दीन के माहिरीन, साईंसदाँ हज़रात हों या तिब व जराहत के मैदान में अपना सिक्का जमाने वाले डॉक्टर, बलन्द पाया हाज़िक़ हों या बड़े-बड़े नब्बाज़ तबीब सब एक दूसरे से इख़्तेलाफ़ करने का हक़ रखते हैं और अपनी-अपनी अक़्ल के मुताबिक़ इन्सानों की फ़लाह व बहबूद में हिस्सा लेते हैं, लेकिन जब-जब इख़्तेलाफ़ात निफ़ाक़ में बदलते हैं तो इन्सानों का जीना दुश्वार हो जाता है और तरक़्क़ी के बजाए तनज़्ज़ुली का दौर शुरु हो जाता है। दीने इस्लाम ने चूँकि इन्सानों को मज़हब के मामले में अक़्ल का इस्तेमाल करने की इजाज़त दी थी, इसलिए उलमा ने अपनी अक़्ल का इस्तेमाल किया और क़ुरआने पाक और अहादीसे पैग़म्बर[स०] की तफ़सीर करते वक़्त अपने इल्म, अपनी फ़हम, अपनी ज़बानदानी, अपने शऊर, अपनी अक़्ल और अपने इदराक का सहारा लिया, इसीलिए मुसलमानों के फ़िरक़े बनते चले गये। सिर्फ़ मुसलमानों के बारे में क्यों कहा जाए? दुनिया का कौन सा ऐसा मज़हब है जिसमें इख़्तेलाफ़ न हुआ हो और फ़िरक़े न बने हों? फ़र्क़ सिर्फ इतना था कि इन फ़िरक़ों के इख़्तेलाफ़ात को हवा देने वाले नहीं थे, क्योंकि उनसे ख़तरा कम था, लेकिन चूँकि इस्लाम का पैग़ाम आसानी से दिल में उतर जाता है, इसलिए इसके पैग़ाम को आगे बढ़ने से रोकने की साज़िशें आँहुज़ूर की ज़ाहिरी हयात तमाम हो जाने के कुछ ही बरसों बाद शुरु हो गई थी और अभी भी जारी हैं, लेकिन ख़ुशी की बात ये है कि मुसलमानों को मुत्तहेद रखने वाली ताक़तें भी हर दौर में सरगर्म रही हैं और ख़ुदा का शुक्र है कि वह आज भी इस सिलसिले में हर मुमकिन इक़दामात करने में मसरूफ़ हैं। जब-जब मुसलमानों में इख़्तेलाफ़ के बीज बोने की कोशिश होती है, अल्लाह उन फ़सलों को जलाकर ख़ाक कर देने वालेएक गिरोह का इन्तिज़ाम भी कर देता है।

इत्तेहादे मिल्लत की बात करने वाले तमाम मुसलमानों के लिए ये निहायत ख़ुशी की बात है कि दुनिया की अहम तरीन इस्लामी युनिवर्सिटी 'जामिअतुल अज़हर' के नये सरबराह शैख़ अहमद अल-तय्यब ने 'जामिअतुल अज़हर' (युनिवर्सिटी) के सरबराह का ओहदा संभालते ही अपनी पहली तक़रीर में इस अज़्म का इज़हार किया कि वह शिया और सुन्नी उलमा को क़रीब लाने की हर मुमकिन कोशिश करेंगे, यानी अब 'जामिअतुल अज़हर' के बैनर के नीचे इत्तेहादे इस्लामी की तहरीक चलेगी, जो वक़्त की सबसे बड़ी ज़रूरत है। आज जब मुसलमानों को मसलक और फ़िरक़े के नाम पर लड़वाने के लिए आलमी पैमाने की साज़िशें हो रही हैं, ऐसे आलम में शैख़ अहमद अल-तय्यब का ये बयान एक ख़ुशगवार झोंके की तरह इस्लामी मुमालिक की सरहदों में दाख़िल हुआ है। उम्मीद है कि शैख़ अहमद अल-तय्यब की ये पहल मुसलमानों में इख़्तेलाफ़ात के बीज डालने वालों के नापाक अज़ाएम को नाकाम करने में अहम किरदार अदा करेगी।

इसके अलावा एक ख़ुशआइन्द ख़बर लीबिया के शहर सरते से भी आई है, जहाँ अरब लीग के सालाना इजलास में उसके सेक्रेट्री जनरल अम्र मूसा ने ये बात कहकर अमरीका और इस्राईल के सियासी गलियारों में खलबली मचा दी कि इस्राईल की हरकतों के पेशे नज़र अरबों की ईरान से बातचीत ज़रूरी है। एक अहम बात ये रही कि इस इजलास में तुर्की जैसे मुस्लिम मुल्क के वज़ीरे आज़म तय्यब उर्दगान ने भी कर्नल क़ज़ाफ़ी के खुसूसी मेहमान की हैसियत से शिरकत की (ख़याल रहे कि तुर्की ने कमाल अतातुर्क के दौरे इक़्तेदार में ख़ुद को इस्लामी मुमालिक की बिरादरी से बिलकुल अलग-थलग कर लिया था और मुसलमानों की मज़हबी आज़ादी सल्ब कर ली गई थी। हिजाब पर पाबन्दी आयद कर दी गई थी और तुर्की ज़बान का रस्मुलख़त बदल कर रोमन कर दिया गया था।) उर्दगान के अरब लीग के इजलास में मौजूदगी मुस्तक़बिल में मुस्लिम मुमालिक के इत्तेहाद के लिए बहुत अहम कड़ी साबित होगी। अरब लीग के इजलास में फिलिस्तीनी इन्तिज़ामिया के सदर महमूद अब्बास ने भी इस्राईल के ख़िलाफ़ सख़्त लहजे का इस्तेमाल किया क्योंकि माज़ी में उन्होंने फिलिस्तीनियों की नाराज़गी के बावजूद इस्राईल की तरफ़ दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। ये और बात है कि इस्राईल ने उनके हाथों से गुलाब का फूल लेकर उनके तमाम जिस्म पर काँटे पेवस्त कर दिये। इस्राईल से वफ़ा की उम्मीद में महमूद अब्बास ख़ुद अपनी क़ौम से बेवफ़ाई पर मजबूर हुए, लेकिन अब ऐसा लगता है कि वह भी धोका खाने के बाद होश में आते जा रहे हैं। ख़ुदा करे इस्राईल का अन्दर ही अन्दर से साथ देने वाले दूसरे मुसलमान भी इस हक़ीक़त को समझ जाएं कि सहयूनियों का सिर्फ इतना ही इरादा नहीं है कि वह मौजूदा सरहदों में रहें, बल्कि उन्होंने अपनी मौजूदा सरहदों से लेकर दरियाए नील तक फैले हुए ग्रेटर इस्राईल का ख़्वाब देखा है और इस ख़्वाब को पूरा करने के लिए दुनिया भर के मुसलमान मुत्तहिद नहीं होंगे तो फिर उनके ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने वाला भी नहीं होगा। इसीलिए अगर इस्राईल से कई हज़ार मील दूर वाक़े हिन्दुस्तान की सरहदों में भी कोई क़रारदाद इस्राईल के ख़िलाफ़ पास होती है तो इस्राईल के एजेन्ट परेशान हो जाते हैं और उसके सद्दे बाब के लिए मुसलमानों के दरमियान कोई फितना पैदा करने की कोशिश करते हैं।

इसी वजह से आल इण्डिया पर्सनल लॉ बोर्ड ने इस्राईल के ख़िलाफ़ तजवीज़ क्या पास कर दी कि एक छोटा सा गिरोह चिराग़पा हो गया। इसी के साथ नदवतुल उलमा को भी निशाना बनाया जाने लगा, जहाँ मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का इजलास हुआ था, जिन सहाफ़ियों ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का साथ दिया, उनकी किरदार कशी की मुहिम चलाने की नाकाम कोशिश भी की गई। अल्लाह का शुक्र है कि लखनऊ का इजलास हर माने में बहुत कामयाब रहा। सिर्फ़ इजलास ही नहीं ऐशबाग़ की ईदगाह में जो शानदार इख़्तेतामी तक़रीब हुई, उसमें मुसलमानों का ज़बरदस्त हुजूम और शिया-सुन्नी उलमा की एक ही स्टेज पर मौजूदगी इस बात की ग़म्माज़ थी कि मुसलमान अपने मसलकी इख़्तेलाफ़ात को निफ़ाक़ में बदलने वालों की हर नापाक कोशिश को नाकाम करेंगे।

ये बात भी क़ाबिले ज़िक्र है कि लखनऊ की एक रज़ाकार तनज़ीम की जानिब से मुल्क के अलग-अलग शहरों में इत्तेहादे मिल्लत कन्वेंशन भी किये जा रहे हैं। मुम्बई में और लखनऊ के कन्वेंशन की कामयाबी के बाद अगले इजलास की तैयारियों के सिलसिले में 11 मार्च को नदवतुल उलमा में एक मीटिंग भी हुई थी। इत्तेहादे मिल्लत के दुश्मनों को शायद ये बात भी नागवार गुज़री और उन्होंने नदवतुल उलमा को निशाना बनाया। यहाँ पर ये कहना ज़रूरी है कि मैं अपने इसी कालम में कई बार लिख चुका हूँ कि मुसलमानों के तमाम फ़िरक़ों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ किताबें तहरीर करने और दिल आज़ार व इश्तेआल अंगेज़ तक़रीरें करने से गुरेज़ करना चाहिए। अगर कोई गिरोह इस मुहिम को आगे बढ़ाता है तो उसका ख़ैर मक़दम किया जाना चाहिए, लेकिन इस गिरोह को ये काम पहले अपने फ़िरक़े के अन्दर शुरु करना पड़ेगा। अपने फ़िरक़े के मदरसों में पढ़ाई जाने वाली ऐसी किताबों को कोर्स से

हटाना पड़ेगा, जो आपस में इज़्तेराब पैदा करती हों। इसी तरह उन मुफ़सिद ज़ाकिरों और ख़तीबों के ख़िलाफ़ भी मुहिम चलानी होगी, जो मुसलमानों के दरमियान नफ़रतों का ज़हर घोलने के लिए मिंबरे रसूल[स॰] का बेजा इस्तेमाल करते हैं। ज़माने की इस्लाह से पहले अपने घर का सुधारना ज़रूरी है।

इसमें कोई शक नहीं कि मैं भी इसी लखनऊ में पला बढ़ा हूँ, जहाँ 115 साल से शिया-सुन्नी फ़िरक़े के लोग लड़ते आए थे और वहाँ का ज़हरीला माहौल ऐसा था कि शिया और सुन्नी महल्ले अलग-अलग आबाद हो गये। हालात ऐसे थे कि सुन्नी अक्सरियत वाले महल्लों से शिया गुज़रते हुए डरते थे और शियों के महल्लों में सुन्नियों का जाना मुश्किल था। अल्लाह का शुक्र है कि अब लखनऊ में पहले जैसे हालात नहीं। वहाँ शियों और सुन्नियों ने समझ लिया है कि हम इख़्तेलाफ़ात के बावजूद एक साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकते हैं। हरचन्द निफ़ाक़ डालने वाली ताक़तें अब भी सरगर्म हैं। इन ताक़तों की निशानदही करने के लिए मैंने 1997[ई॰] में ''शिया-सुन्नी क़ज़िया, कितना मज़हबी कितना सियासी'' के उनवान से एक किताब लिखी थी और उस किताब की इतनी पज़ीराई हुई कि उसके चार एडिशन हाथों हाथ फ़रोख़्त हो गये। मैंने उस किताब में बताया था कि आज़ादी से क़ब्ल किस तरह अंग्रेज़ों ने शिया-सुन्नी तफ़रक़े को हवा दी और आज़ादी के बाद जनसंघ का क्या रोल रहा... लखनऊ जैसे छोटे शहर में इस्राईल की क्या दिलचस्पी हो सकती है, इसका तफ़सीली तज़किरा मैं उस सहूयूनियत शिकन सफ़रनामे में कर चुका हूँ, जो मैंने फिलस्तीन के दौरे से वापसी पर लिखा था और जिसको ''रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा'' के लाखों क़ारेईन (पाठकों) ने दिलचस्पी के साथ पढ़ा था।(1) मुझे फ़ख़्र है कि मैं एक ऐसे अख़बार से वाबस्ता हूँ, जो इलाक़ाई या मक़ामी हदों में क़ैद नहीं, बल्कि इसका दायरा शिमाली हिन्दुस्तान के कोहिस्तानी इलाक़ों से लेकर जुनूबी हिन्दुस्तान के साहिलों तक और ख़लीजे बंगाल से लेकर बह्रे अरब के कनारों तक फैला हुआ है, वेब एडिशन की मारफ़त ''रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा'' की रसाई दुनिया के हर कोने तक हो गई है।

(बशुक्रिया रोज़नामा राष्ट्रीय सहारा 'उर्दू' 31 मार्च 2010[ई॰])

(1) ये सफ़रनामा हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं में नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन, इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमाब लखनऊ से किताबी सूरत में प्रकाशित हो चुका है। शायक़ीन हज़रात इदारे से राब्ता क़ायम करें।

बक़िया....... इस्लाम में पर्दे का तसव्वुर

मुलाहेज़ा फ़रमाइये कि सिर्फ़ जिस्म ही नहीं बल्कि जो चीज़ें जिस्म की ज़ीनत हैं, उनके वास्ते भी मुमानेअत है कि किसी ग़ैर मर्द के सामने ज़ाहिर न करें। आयत में पूरी तफ़सील है जो क़ुरआन मजीद में देखी जा सकती है। मगर आयत की ज़बान यहाँ भी नहीं रुकती है बल्कि इरशाद होता है: ''और रास्ता चलते में अपने पैर ज़मीन पर मार कर न चलें (कि जो ज़ीनतें उनकी छुपी हुई हैं उनका पता चल जाए)''। ये है ग़ैरते इलाहिया और ये है इन्तिहाई तालीमे हिजाब कि अगर औरत ज़ेवर पहने हुए हो तो वह ज़ेवर मर्दों को दिखाना कैसा, इस ज़ेवर की आवाज़ भी न सुनाई दे। जिस ख़ालिक़ को ये गवारा नहीं कि औरत के ज़ेवर की आवाज़ मर्द सुनें, वह कब गवारा करेगा कि ज़ेवर दिखाये जाएं और जब ज़ेवर का बेपर्दा होना गवारा नहीं, तो वह कब गवारा करेगा कि वह हाथ पैर दिखाये जाएं जिनमें ज़ेवर हैं और जो हाथों और पैरों का ज़ाहिर होना जायज़ न रखे तो वह इसकी कब इजाज़त देगा कि मुँह दिखाये जाएं। इस आयत के बाद अब ज़रूरत तो नहीं है कि कोई और आयत पेश की जाए। साहेबाने ईमान और इन्साफ़ के लिए इस आयत ही में वह ज़बरदस्त ज़ख़ीरा मौजूद है जो पर्दे की अज़मत को रोज़े रौशन और आफ़ताबे निस्फ़ुन्नहार की तरह अयाँ कर देता है मगर मसअले की अहमियत को देखते हुए इन्शाअल्लाह अगले हिस्सों में मज़ीद अक़्ली और नक़ली दलाएल पेश होंगे। वमा अलैइना इल्लल बलाग़।

(बशुक्रिया राष्ट्रीय सहारा (उर्दू) 26 फ़रवरी 2010[ई॰])

Noor-e-Hidayat Foundation

(Regd.) Lucknow

Estd. 16th July 2003 AD

15th Jamadiul Awwal 1424 AH.

In the memory of ***Ghufran Ma'ab*** Maulana S. Dildar Ali Naqavi (1753-1820), the distinguished religious scholar reformer leader.

Founder President: **Maulana Syed Kalbe Jawad**

OUR MISSION: The thought-provoking writings and the fruit-bearing efforts of the first and the foremost Mujtahid (the scholar-researcher of Islamic Jurisprudence) of South Asia, Ghufran Ma'ab has undertaken tirade of presenting Islam and its' commandments in the real perspective, carried out the gratifying act of illuminating each and every corner of South Asia with the light of guidance (*noor-e-hidayat*) and given religious leadership to Shia society. An extension of his mission is Noor-e-Hidayat Foundation. His immortal foot-steps are our guiding force.

In this age of IT advancement, when human mind is overburdened with the rush of both positive and negative types of informations, there is dire need of presenting Islam in its real perspective in contemporary languages and in modern lexicon. Keeping this in view, we have organized our Publication Division. **NHF** is bringing out a monthly magazine of standard, **'Shua-e-Amal'** in an eye-cathing get-up. Through the magazine, we are publishing fresh articles of high academic value and reproducing ever-blooming type of works of our past literary icons. Moreover, **'Khandan-e-Ijtehad'** Number is also published as an annual journal, coinciding with the occasion of yearly religious gathering, Majalis-e-Azeem.

Education is also a sister concern of IT. Our special attention is towards it too. **Islamic Studies Centre** and **Maktabatuz-Zahra** have already been established and are active in imparting religious education respectively to the boy and girl students.

IT and education become purposeless if their benifits are not able to reach each and every section of the society, especially if the weaker, helpless and down-troden people are not helped to their upliftment and if their evils and defects are not rectified. So the social welfare & reform of the society's irrational & improper rites and customs, help to poor and helpless and arrangement of medical treatment of patients to the possible extent are on our foremost agenda.

The social welfare and reform also cover the security and maintenance of *waqf* properties. These waqfs established by our past generations out of their pious intentions are our valuable wealth. Hence we always evdeavour for their proper maintenance and development.

AIMS & OBJECTIVES

MESSAGE OF LOVE

❖ To create atmosphere conducive to national integeration and fraternity.

❖ To develop sense of patriotism in masses.

❖ To act for upliftment of the nation.

EDUCATION

➢ To establish, manage and maintain educational institutions.

➢ To arrange for education, right from primary to higher level.

➢ To establish technical institutions and religious educational institutions and to manage and maintain them.

➢ To arrange library and reading room(s)

HELPING HELPLESS AND DESTITUTES

• Free education and training to the children of poor section of the nation and to develop employment opportunities for the

handicapped, orphans, widows, helpless and older to the possible extent.

- To arrange for employment to poor and destitute ladies after giving them proper training.

PUBLICATION

To publish books and periodicals to bring NHF's thoughts to the people.

SOCIAL WELFARE

❑ To work for removal of evils and of wrongs and useless customs and rites, prevalent in the society. To arrange dowryless marriages and to arrange marriages of poor girls and widows on our own expenses.

❑ To oppose evils, characterlessness and orthodox behaviours in the society and to work for their removal.

MEDICAL TREATMENT

To establish charitable Hospital(s) and Medical College(s), after proper permission and approval from the Government, for better treatment of the poor, and to arrange therein for the treatment through latest techniques and to provide free medicines.

SERVICES & ENDEAVOURS

Monthly 'Shua-e-Amal' (Urdu-Hindi)

❑ Pulished regularly since July 2004.

❑ Decorated with eye-caching cover, charming getup and incorporated with intrinsic qualities.

❑ Trying consistantly for the religious awareness of the community through quality articles of high academic and research value.

❑ Particular attention towards special Numbers.

❑ Annual Subscription: Rs. 200/- (Rupees two hundred only)

ISLAMIC STUDIES CENTRE

Estd: 15th Jamadiul Awwal 1427/June, 2006

❑ Arrangement for education of theology, Quranic phonetics, Arabic and Persian for school/college-going boy students.

❑ Special attention towards article-writing and research works.

MAKTABT-UZ-ZAHRA

❑ In fact, a revival of special maktab established by Maulana S. Kalbe Abid (Rahmat Ma'ab) as early as in 1984

❑ Arrangement for education of theology, Quranic phonetics, Arabic and Persian exclusively for the girl students of the community.

UMDATUL ULAMA LIBRARY & RAHMAT MA'AB READING ROOM

❑ A collection of thousands of valuable books on Islamic studies.

❑ Devoted to public, particularly for academic and research work.

❑ Timing: From: 9.00 AM to 2.00 PM (Friday closed)

EMADUL ISLAM BOOK DEPOT

❑ Special arrangement of sale of publications of **NHF** and other publishers.

PUBLICAION

Publication of books and booklets in conformity with the demands of the time.

Some Titles (already published)

✓ *'Imam Zainul Aabideen a.s. ki zindagi'* Urdu translation of book penned by the leader of Islamic Revolution, Syed Ali Khamenai

✓ *Tasawwur-e-Mahdi* a.f. (Urdu version of the work) by Shaheed Baqir as-Sadr.

✓ *Insan-e-Azam* (A biography of Ameerul Momineen a.s. in Urdu) by Allama Hindi (Late) Syed Ahmad Naqavi.

✓ *Ameer-e-Mukhtar* (Urdu) by Maulana S. Hasan Zafar Naqavi

✓ *Nishan-e-Raah* (Hindi translation of collection of essays by Maulana S. Hasan Zafar Naqavi.)

✓ *Alamdar-e-Karbala* (Hindi) by 'Shakeel' Shamsi

✓ *History of Sheeiyat in India* (Urdu) by S. M. Baqir 'Shams' Lucknowi

✓ *Gulkada-e-Manaqib* (Collection of poems by) 'Fakhir', 'Zakhir', 'Fatir' and 'Kamil'.

✓ *Shia-Sunni Pact* presented by Noor-e-Hidayat Foundation

✓ *Muhkam Aayat* (Urdu) by Dr. Raza Husain 'Ramz', Lucknow

✓ *Saheefat-us-Sajideen* compiled by Prince Sartaj Mirza

✓ *Sahyooni Dahshatgardi* (Urdu) by Journalist 'Shakeel' Shamsi

✓ *Israil ka Aatankwad* (Hindi) by Journalist Shakeel Shamsi

✓ *Kalam-e-Zaira* (Urdu) by Marziya Shamsi 'Zaira'

✓ *Imam Husain (A.s.) ka Sandesh Manavta ke Nam* (Hindi) by Maulana S. Ali Naqi Naqavi

✓ *Islami Aqeede* (Hindi Version of Person work of) S. Mujtaba Moosvi Lari Trans. By 'Tazheeb' Nagrauri

✓ *Dua-e-Kumail* (Urdu) Trans. By Maulana Mohsin Ali Najafi

✓ *Aasra* (Urdu Poems) by 'Tanveer' Nagrauri

✓ *Durr-e-Nayab* (Urdu Poems) by 'Yawar' Bahraichi

✓ *Sirat-e-Sukoon* (Urdu) by Dr. S. Raza Husain 'Ramz'

✓ *Anwar-e-Masumeen* (Holy Biography of the fourteen infallible in Urdu) by Dr. Noor-un-Nisa.

✓ *Khandan-e-Ijtihad* Numbers (published annually.)

PLANS

▪ Writing, compiling and translating first into Urdu, then in Hindi and English and thereafter in other Indian languages:

▪ Biographies of 14 Masooms and other distinguished religious personalities.

▪ Publication of distinguished works of scholors belonging to Khandan-e-Ijtehad and other scholar-writers, after proper editing and formating.

▪ History of Shias and Shiaism.

▪ Biographical sketches of Shia scholors, litterateurs and intellectuals with special reference to their acadamic & literary works.

▪ General utility literature on Ethics and social reform.

▪ Inventory of Shia holy places and waqfs in India.

▪ Summarizing, formating and translating the reference work of high standard such as *'Tuhafa-e-Isna Asharia, Imadul Islam, Nuzha-e-Isna Asharia, Hadeeqa-e-Sultaniya, Abaqatul Anwar* etc.

N. B. Other useful projects would be included according to availability of resources and man-power.

[To encourage research synchronized with needs of the hour is our motto]

You are requested:

• To extend your valuable help and support to us

• To contact us in your religious problems

• To help us through sahm-e-Imam (Khums) [We have kind permission from our marjas, to receive a sum of one million Rupees a year out of Sahm-e-Imam] or other religious amounts such as Sadqa, Fitra, Price of hides of Qurbani, Imam Zamin etc.

• To sponsor publication of any selected book/booklet of the organization or an issue of the monthly ***Shua-e-Amal***, in Isal-e-Sawab to your beloved deceased relatives.

• To subscribe regularly the monthly 'Shua-e-Amal' and extend your help to the monthly and other books/booklets of Noor-e-Hidayat foundation in their publication

• To donate published/unpublished religious book, manuscript, marsia, collection of marsias, nuahas, or Qaseedas to our library for better use.

Head Office:

Noor-e-Hidayat Foundation

Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow-3 (INDIA)

website: www.noorehidayat.com

e-mail: noorehidayat@noorehidayat.com

Ph:0522-2252230 — 0522-4062731

Mob: 09335276180

To

Jb………………………………. Sahab

Salamun Alaikum,

Hope this finds you in the best of your health and spirit

छववत.म.भ्पकंलंज थ्वनदकंजपवद ी जांमद नच अमतल ीनहम बीवसंतसल ृवता पण्मण चतमेमतअंजपवद व िचनइसपेीमक दक नद.चनइसपेीमक ृवता व िदबपमदज ीपं न्समउंए सपजजमतंजमनते दक चवमजे दक चनइसपबंजपवद व िपउचवतजंदज इववो उवदह जीमउण्ैव जीम ृवता ज ींदक पे पिसउपदह व िजीवनेंदके व िचनइसपेीमकध्नदचनइसपेीमक इववो व जींज जीम इववो बवनसक चतमेमतअमक पद वितउ व िब्क्े दक पद वितउ व िइववो इल चतपदजपदह पजण

After completing the work connected with the library of Imambara Ghufran Maab, it would be extended to other small and big libraries in India. Along with it, establishment of a big library is also an aim of the organization.

For it you are requested to donate the published/unpublished religious books/ manuscripts, *marsias* (elegies for Imam Husain (a.s.) and his companions collection of *mersias*, *nauhas*, and *qaseedas* for the library, if you have any.

Likewise, we intend to publish books and booklet in Urdu, Hindi and English on Imam Husain (a.s.) and his companions and to distribute them among Shias and specially among people of other religion free of charge. Initially atleast 50 booklets and five books are to be published in minimum 2000 and maximum 5000 copies. For it a huge money is required. So you are requested to sponsor publication of some selected book/booklet of the organization or an issue of monthly ***'Shua-e-Amal'*** in commemoration of your deceased relatives for their *Isal-e-Sawab* and distribute them in required number in your locality and permit the organization to distribute the rest free of charge in other cities and towns.

The organization has permission from the highest Shia religious authorities the holy marjas, specially the Grand Ayatullah Aqai Seestani & Grand Ayatullah Syed Ali Khamenai, may He keep him up and his holy patronage last very long for us, to receive a million Rupees out of *Sahm-e-Imam* (a.s.), the Imam's portion of *Khums*. So you are requested to donate Khums and other religious amounts such as *Sadqa*, *Fitra*, price of hides of *Qurbani*, *Imam Zamin* etc.

You may send the amount through M. O. or Demand Draft in favor of "Noor-e-Hidayat Foundation, Lucknow"

Trust your religious passion and sympathy toward the society would not disappoint us.

Thanks   Sincerely your's

(Mustafa Husain Naqavi)
'Aseef' Jaisi
Secretary
Noor-e-Hidayat foundation, Lucknow

मुख्य समाचार

प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर शिया वक़्फ़बोर्ड के चेयरमैन मुन्तख़ब

गुज़श्ता कई महीनों से शिया वक़्फ़ बोर्ड की तश्कीले नौ और चेयरमैन के इन्तेख़ाब के मसले को लेकर एक मक़ामी उर्दू अख़बार हस्बे दस्तूरे क़दीम झूठी-सच्ची ख़बरें शाया करता रहा और न जाने किस मसलेहत के तहत जनाब डा० हसन अख़तर साहब (रिज़वी बिल्डर) का नाम शाया करता रहा। हालांकि चेयरमैन के ओहदे के लिए चन्द नाम मसलन जस्टिस हैदर अब्बास साहब और जनाब वसीम रिज़वी साहब के नाम भी मन्ज़रे आम पर आते रहे और जबकि कुछ वुजूह की बिना पर जस्टिस हैदर अब्बास रज़ा साहब, जनाब अली हैदर रिज़वी एडवोकेट, जनाब मन्ज़र शाहिद साहब (मजिस्ट्रेट) ने इस्तेफ़े दिये और आख़िरकार इस मन्सबे जलील के लिए जायस के होनहार फ़रज़न्द प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर साहब को बिला मुक़ाबला चुना गया। इस पुरमसर्रत मौकें पर इदारा अलल उमूम अहले जायस और अलल ख़ुसूस प्रोफ़ेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर को तोहफ़-ए-तहनियत पेश करता है। प्रोफेसर कमालुद्दीन अकबर सफ़े अव्वल के ख़तीब, हक़ पसन्द नाक़िद और मोहक़्क़िक़, मज़बूत इन्शापरदाज़, माहिरे क़ानून और सबसे बड़ी बात अच्छे और सच्चे इन्सान हैं, उन पर पूरी मिल्लत को इत्मिनान है और क़ौम उन से हमेशा भलाई की उम्मीद रखती है।

ख़तीबे इन्क़ेलाब मौलाना हसन ज़फ़र साहब का हिन्दुस्तान दौरा

गुज़श्ता दिनों ख़तीबे इन्क़ेलाब मौलाना सै० हसन ज़फ़र नक़वी साहब दो हफ़्ते के दौरे पर हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए। उनकी ख़िताबत और हक़ बयानी के फिदाई जूक़ दर जूक़ उनकी मजलिसों में पहुँचे। चुनानचे दिल्ली, लखनऊ और इलाहाबाद में मजालिस को ख़िताब फ़रमाया और अपने पुर-इश्तियाक़ सामईन को भरपूर इस्तेफ़ादे का मौक़ा फ़राहम फ़रमाया।

मौलाना हसन ज़फ़र नक़वी ख़ानदाने इज्तेहाद की नामवर फ़र्द और शोहर-ए-आफ़ाक़ ख़तीब हैं नीज़ पाकिस्तान में एक बड़े और महबूब क़ाएद हैं। मीरास में जहाँ ख़िताबत पाई वहीं मौलाना को शायरी भी हाथ आई। मौलाना इब्तेदा से नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की सरपरस्ती फ़रमा रहे हैं इस बार भी लखनऊ आने के दूसरे दिन नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन तशरीफ़ लाए और अपने पुर-मग़्ज़, पुर-असर और हमदर्दाना लहजे में नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की बेहतरीन कारकरदगी को सराहा।

काएदे मिल्लत के हाथों

सिब्तैनाबाद के सामने सबील का इफ़्तेताह

सैय्यदुश्शोहदा इमाम हुसैन[अ०] ने कहा था कि ''जब कभी ठण्डा पानी पीना मेरी प्यास को ज़रूर याद कर लेना'' इमाम के इसी पैग़ाम को आम करने के लिए इमामबाड़ा सिब्तैनाबाद की इन्तिज़ामिया कमेटी की जानिब से हज़रतगंज में हलवासिया मार्केट के सामने इमामबाड़ा सिब्तैनाबाद के सदर दरवाज़े पर सबील लगाई गई जिसके ज़रिये बिला तफ़रीक़ मज़हबो मिल्लत सभी शहरियों की प्यास बुझाई जायेगी। इस सबील का इफ़्तेताह क़ाएदे मिल्लत मौलाना सै० कल्बे जवाद साहब ने किया।

सबील का आग़ाज़ मौलाना सै० कल्बे जवाद ने प्यासों को अपने हाथ से पानी पिलाकर किया। शदीद गर्मी में सबील पर दिन भर प्यासों का जम्मे ग़फ़ीर नज़र आया। इमामबाड़ा सिब्तैनाबाद की इन्तिज़ामिया कमेटी के ओहदेदारों और आम शहरियों ने दिन भर प्यासों को पानी और शरबत पिलाने के साथ गुड़ और चने भी तक़सीम किये। सबील का ये सिलसिला मौसमे गर्मा के दौरान जारी रहेगा।

इस्राईल तबाही के रास्ते पर चल रहा है: ईरानी सदर

अमरीकी फ़ौज वापस चली जाए, ये दरख़्वास्त नहीं हुक्म है

ईरानी सदर महमूद अहमदी नेजाद ने एक बार फिर कहा है कि इस्राईल तबाही के रास्ते पर चल रहा है और जल्द ही सफ़्ह-ए-हस्ती से मिट जायेगा। दूसरी तरफ़ अमरीका ने कहा कि वह यहूदी ममलकत के साथ खड़ा रहेगा और उस पर कोई आँच नहीं आने देगा। वह ईरान के आर्मी-डे की सालाना परेड से ख़िताब कर रहे थे। सरकारी टी०वी० के मुताबिक़ ईरान ने 'अल्लाहु अकबर' के फ़लक शिगाफ नारों की गूँज और फ़ौजी साज़ो सामान की नुमाइश के ज़रिये किसी मुतवक़्क़ा जारेह का ये पैग़ाम दिया कि उनका हमला पूरी ताक़त के साथ पस्पा कर दिया जायेगा। इस मौक़े पर मुल्क में तैयार किये गये बग़ैर पायलेट के जासूसी तैयारों और मीज़ाइलों की नुमाइश की गई। जुनूबी तेहरान में ईरान के इस्लामी इन्क़ेलाब के बानी इमाम ख़ुमैनी के मज़ार के क़रीब एक बड़े मजमे से ख़िताब करते हुए सदर महमूद अहमदी नेजाद ने कहा कि इस्राइल तबाही के दहाने पर खड़ा है और इस्राईल की तबाही इस ख़ित्ते के अक़वाम की दिली ख़्वाहिश है। इलाक़े में अद्मे सेक्योरिटी के बाइस इस मुल्क को जड़ से उखाड़ फेंका जाए। उन्होंने कहा कि मज़बूत ईरानी फ़ौज की मौजूदगी मशरिक़े वुस्ता में अमन की ज़मानत है। उन्होंने फ़ौज को तलक़ीन की कि मुल्क पर किसी जानिब से होने वाले हमले का मुँहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार रहें। उन्होंने कहा कि आज ईरानी फ़ौज काफ़ी मज़बूत है।

अहमदी नेजाद ने एक मरतबा फिर दूसरी आलमी जंग में यहूदियों के क़त्ले आम यानी 'होलोकास्ट' को एक फ़र्ज़ी कहानी क़रार देते हुए कहा कि इस्राईल जल्द ही सफ़ह-ए-हस्ती से मिट जायेगा। ईरानी सदर ने अमरीका के लिए सख़्त अलफ़ाज़ का इस्तेमाल करते हुए वाशिंगटन पर ज़ोर दिया कि वह जल्द से जल्द अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ से अपनी फ़ौज वापस बुलाए। ईरानी सदर ने कहा कि इन मुल्कों में अमरीकी अफ़वाज की मौजूदगी का कोई जवाज़ नहीं है। अमरीकी फ़ौज ख़ित्ते में वापस चली जाए और ये दरख़्वास्त नहीं बल्कि एक हुक्म है। अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ के अवाम को अपने दाख़िली मामलात ख़ुद ही हल करने दिये जाएं। ईरानी सदर ने अपने ख़िताब में मज़ीद कहा कि जंग की सूरत में इस्राईल का कोई कोना महफ़ूज़ नहीं रहेगा। उन्होनें का कि खित्ते में अमरीकी अफ़वाज की मौजूदगी मशरिक़े वुस्ता के अमन के लिए सबसे बड़ा ख़तरा है और ईरान पर किसी हमले की सूरत में मीज़ाइल के साथ-साथ खित्ते में अमरीकी अफ़वाज और मफ़ादात को भी निशाना बनाया जायेगा। इसी दौरान फ़ौज की जनरल अहमद रज़ा पर्दिस्तान ने अपने एक बयान में कहा है कि ईरान जल्द ही मुल्क के जुनूब में बड़े पैमाने पर फ़ौजी मश्क़ों का आग़ाज़ करेगा। फ़ारस न्यूज़ एजेन्सी से गुफ़्तगू के दौरान जनरल पर्दिस्तान ने इन जंगी मश्क़ों की तारीख़ का एलान नहीं किया और न ही बताया कि इनमें कितने फ़ौजी हिस्सा लेंगे। ताहम उनका कहना था कि इन मश्क़ों में तमाम फौजी शोबे शामिल होंगे। जनरल पर्दिस्तान के मुताबिक़ इन मश्क़ों का मक़सद मुल्क पर किसी हमले की सूरत में दुश्मन को ज़बरदस्त जवाब देने की तैयारी है।

ग़ज़्ज़ा के 13 शहरी शहीद हुए

फिलिस्तीन में इस्सानी हुक़ूक़ कमीशन के लिए काम करने वाली तनज़ीम "अल-मीज़ान" ने अपनी ताज़ा रिपोर्ट में कहा है कि क़ाबिज़ इस्राईली फ़ौज ने रवाँ साल की पहली चौथाई में ग़ज़्ज़ा में रियासती दहशतगर्दी के दौरान 13 फिलस्तीनी को शहीद किया जबकि दर्जनों को ज़ख़्मी और गिरफ़्तार किया। मिडिलईस्ट स्टडी सेण्टर की रिपोर्ट के मुताबिक़ अल-मीज़ान की जानिब से फिलिस्तीन में इस्राईली फ़ौज के हाथों इन्सानी हुक़ूक़ की पामाली और आलमी क़वानीन की संगीन ख़िलाफ़वर्ज़ियों से मुताल्लिक़ जनवरी 2010ई० में 31 मार्च तक होने वाले जानी और माली नुक़सान पर तफ़सीली रिपोर्ट जारी की गई है। रिपोर्ट के मुताबिक़ गुज़श्ता तीन माह के अरसे में क़ाबिज़ फौज की फ़ायरिंग और गोलाबारी से ग्यारह बच्चों और दो ख़्वातीन समेत 62 अफ़राद ज़ख़्मी हुए। रिपोर्ट में कहा गया कि इस्राईल ने जहाँ एक तरफ़ ग़ज़्ज़ा की मुकम्मल मआशी नाकाबन्दी करके शहरियों को उनके बुनियादी मआशी हुक़ूक़ से महरूम कर दिया है, वहीं गुज़श्ता तीन माह के दौरान फिलिस्तीनी माहीगीरों पर अरस-ए-हयात तंग करने की कोशिश की गई है। मुहासराज़दा ग़ज़्ज़ा की पट्टी में माहीगीरी ही एक ऐसा पेशा है जिससे ग़ज़्ज़ा के शहरी किसी हद तक अपनी मआशी मुश्किलात हल करने की कोशिश करते हैं, क़ाबिज़ फ़ौज की तरफ़ से माहीगीरों को ख़ास तौर से निशाना बनाया जाता रहा। इस्राईली फ़ौज ने ग़ज़्ज़ा के शहरियों को समन्दर में तीन किलोमीटर से आगे जाने पर पाबन्दी आयद कर दी थी जबकि सहयूनी फ़ौज के हमलों में बड़ी तादाद में फिलिस्तीनी माहीगीरों को शदीद दुश्वारियों का सामना करना पड़ा। आदादो शुमार के मुताबिक़ क़ाबिज़ फ़ौज की तरफ से फिलस्तीनी माहीगीरों को तीन माह में 21 मरतबा तशद्दुद का निशाना बनाया गया जबकि उनकी बड़ी तादाद को गिरफ़्तार करके उन्हें 1948ई० के मक़बूज़ा इलाक़ों क़ायम तफ़्तीशी मराकिज़ में मुन्तक़िल किया गया। रिपोर्ट के मुताबिक़ गुज़श्ता तीन माह की सहयूनी कारवाईयों में ग़ज़्ज़ा में 14 मकानात को नुक़सान पहुँचा, क़ाबिज़ फ़ौज के मुसलसल हमलों और रियासती दहशतगर्दी की कारवाईयों में ग़ज़्ज़ा के ज़रई और सनती शोबे को भी बुरी तरह नुक़सान पहुँचाया गया। इस दौरान कम से कम 45 अफ़राद को गिरफ़्तार करके तफ़्तीश के लिए नामालूम मक़ामात पर मुन्तक़िल कर दिया गया।